Original Paper

ISSN: 2321-1520

संजीव कृत 'धार' उपन्यास में निहित विचार एवं भाषा विश्लेषण

चौहान हेतलबहेन रावसिंग

पीएच.डी शोध-छात्रा
भाषा साहित्य भवनगुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद-३८०००९

जब कोई लेखक किसी रचना का सृजन करता हैं तब वह उन परिस्थितियों को उजागर करता है, जिन्हें वह अपने आसपास होते हुए देखता है। संजीव ने अपने उपन्यास 'धार' में उन घटनाओं एवं परिस्थितियों को उभारा हैं, जिसे उन्होंने नज़दीक से देखा और अनुभव किया है। सत्य घटना पर आधारित यह उपन्यास कोयलांचल एवं वहाँ के आदिवासी मजदूरों को केन्द्र में रखकर रचा गया है।

विचार विश्लेषणः

'धार' उपन्यास में प्रस्तुत विचारों को केन्द्र में रखकर विश्लेषण करने का उपक्रम है। यह उपन्यास मूलतः संथाल परगना के आदिवासियों को केन्द्र में रखकर रचा गया है। लेखक ने आदिवासी जीवन को उजागर करते हुए उनकी मनोव्यथा को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

समाज में व्याप्त जिन विषम परिस्थितियों को देखकर अनदेखा कर दिया जाता हैं, उन विषम परिस्थितियों की ओर अंगुलिनिर्देश करते हुए लेखक ने अपने विचारों को इस उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत उपन्यास आशावादी सोच पर पनपता हुआ उपन्यास है। पुरुष को अपने अधिकारों के लिए लड़ने का जितना हक़ हैं, उतना ही हक़ स्त्रियों को भी है। लेखक ने इस उपन्यास में स्त्रियों के हक़ की बात स्पष्ट की है। इस उपन्यास की प्रमुख नायिका मैना है। आदिवासी मैना एक मज़दूरनी है। लेखक ने इस चरित्र का निर्माण एक शक्ति के रूप में किया है। अनेक झंझावातों से जूझती मैना इस उपन्यास में एक अविस्मरणीय चरित्र के रूप में उभरकर आई है। पति एवं पिता के दलाल बन जाने पर एवं माफिया गिरोहों का साथ देने पर सरेआम उनका त्याग कर देती है। पति को छोड़कर समाज में अकेले रहेने का साहस दिखाती है। औरतों के प्रति अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए संजीव मैना के माध्यम से लिखते हैं- 'मरद औरत को छोड़ सकता और औरत मरद को नई छोड़ सकता... '(१) इस कथन से स्पष्ट होता हैं कि संजीव औरतों के हक़ एवं आत्मसम्मान को लेकर आशावादी एवं आधुनिक सोच रखते हैं। नायिका मैना के माध्यम से लेखक अपने विचारों को समाज तक पहुंचाना चाहते हैं कि हर औरत को अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ने का हक़ है।

लेखक ने आदिवासी अंचल एवं आदिवासी जीवन की आर्थिक विषमताओं को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए है। आदिवासियों में शिक्षा के अभाव के कारण अंधविश्वास, गरीबी, शारीरिक शोषण, आर्थिक शोषण आदि समस्याओं को वेग मिला है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने सभी आदिवासियों की मनोवेदना को व्यक्त किया है। आदिवासियों की आर्थिक विषमता को लेकर संजीव ने लिखा है- 'चोरी से कोयला काटने-बेचने का काम भी

पर्याप्त नहीं है, फिर दूर-दूर के ठेकेदार आते हैं, इन्हें सस्ती मजदूरी पर काम के लिए ढोर-डाँगरों की तरह हाँक ले जाते हैं। सोचिए, कितने आश्चर्य की बात है कि धान के खेत, इतनी कोलियरियाँ और छोटे-से लेकर चित्तरंजन और केबुल्स के बड़े कारखाने होते हुए भी इनकी जिन्दगी में कोई सुरक्षा नहीं।'(२) इस कथन से स्पष्ट होता है कि कोयले के खजाने पर रहने के बाद भी इन्हें चोरी-डकैती का काम ही करना पड़ता है। ठेकेदारों द्वारा शोषण होने के कारण इन आदिवासियों को सुरक्षित नौकरी प्राप्त नहीं होती।

आदिवासी परिवेश एवं आदिवासी संस्कृति को लेकर लेखक ने अपने विचार प्रस्तुत किए है। संजीव ने आदिवासी संस्कृति को आर्य संस्कृति से श्रेष्ठ बताया है। हमारे पास जो कुछ भी हैं, वह आदिवासी संस्कृति से लिया हुआ है। फिर भी इस जाति को पिछड़ी एवं नीच जाति माना जाता है। आदविासियों के रहन-सहन को उजागर करते हुए संजीव लिखते हैं- 'यहाँ कुछ ब्राह्मणों के भी घर ऐसे हैं कि अन्दर चले जाएँ तो गन्दगी से आपका सिर फटने लगे, लेकिन आपको एक भी आदिवासी का घर गन्दा नहीं मिलेगा, न अन्दर से न बाहर से, चाहे वे सूअर ही क्यों न पोसें। आपने मजूरनों को काम करते देखा होगा। आदिवासी औरते सिर पर एक गमछा रख लेंगी जो पीठ के नीचे तक फैला होगा, चाहे वे कोयला ही क्यों न ढो रही हो, जबकि दूसरी 'देशवाली' औरतों में ये चीज आपको नहीं मिलेगी। आदिवासी संस्कृति तो इस मायने में आर्य संस्कृति से बेहतर थी, भले ही वे साँवले हो और आर्य गोरे। हमारे पास जो कुछ भी हैं उसका ज्यादातर भाग आदिवासी संस्कृति से लिया हुआ है।'(३) इस कथन से स्पष्ट होता है कि लेखक ने आदिवासी संस्कृति एवं वहाँ के जन-जीवन को नजदीक से देखा-परखा होगा।

समाज में बढ़ रही पुलिस की तानाशाही को लेखक ने इस उपन्यास में उजागर किया है। पुलिस की निष्क्रियता का पर्दाफाश करते हुए संजीव लिखते हैं- 'पुलिस असली अपराधी को न पकड़ पाती या पकड़ना न चाहती तो उसे खानापूर्ति में डाल देती। इस तरह उसका व्यक्तित्व गल-गलकर स्थानापन्न बनता रहा- चोरों, जेबकतरों, गुंडो, बलात्कारियों का...।'(४) घूस न मिलने पर एवं अपनी नाकामयाबिओं को छिपाने के लिए पुलिस निर्दोष लोगों को पकड़कर उन पर अत्याचार करती है। पुलिसकर्मियों का 'सेवा,शांति और सुरक्षा' का सूत्र सिर्फ नाम मात्र का सूत्र बनकर रह गया है। पुलिस थाना सुरक्षा के बदले असुरक्षा का भाव उत्पन्न करता है। संजीव ने पुलिस थाने को मरघट से भी ज्यादा भयानक बताया है। वे लिखते हैं कि- 'जैसे-जैसे उसके कदम थाने की ओर बढ़ने लगे, उसने महसूस किया कि इत्ती रात को अकेले थाना जाना मरघट से भी ज्यादा भयावना है। आगे कदम-दर कदम वह ऐसे रख रही थी, जैसे दलदल में पाँव रख रही हो।'(५) प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि आज समय इतना बदल चुका है कि समाज का रक्षक ही समाज का भक्षक बन गया है। जिस पुलिस से हम सुरक्षा की अपेक्षा रखते हैं, वही पुलिस मौके का फायदा उठाकर स्त्रियों का शोषण करती है। जेल में जेलर द्वारा बलात्कार का भोग बनी मैना अब पुलिस की शरण में जाने से डरती है। इस प्रकार संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से पुलिस की तानाशाही को उजागर किया है।

सबसे पिछड़ा हुआ वर्ग-आदिवासी समाज है। जिनका न तो कोई वजूद रहा हैं, न ही कोई पहचान। संजीव ने आदिवासी नायिका मैना के माध्यम से उन सभी आदिवासियों की मनोवेदना को वाचा दी है। हक़ से वंचित आदिवासियों की व्यथा के बारे में मैना के माध्यम से संजीव लिखते हैं- 'आज ई ठो सोचने का बात हैं कि हम ऐसे ई रएगा। पानी का पाइप हमरा छाती पर से गुजरता हमको एक बूंद पानी नई, रेललाइन बगले में हैं, मगर हमरा खातिर सौ कोस दूर, वोट देने को हमको आज तक कोई बोला नई, हमरा चिट्ठी-पत्री निहालसिंह के पते पर आता। हमरा कोई पता-ठिकाना नई। लेकिन हम बोलता रजिस्टर में सब हैं, ई बाँसगड़ा भी, गाँव का मालिक भी हैं, मुखिया, महेन्दर बाबू जो हियाँ हम दलिद्दर लोगों के साथ नई रएता, उसको गैस में जलना नई पड़ता और भी बहोत कुछ है। मगर हमरा खातिर नई। कायें नई- इस खातिर की हम अपना किस्मत उनका पास बन्धक छोड़ा है। कोयला का

ख़जाना पे हम रएता हैं, फिर भी कंगाल... कब तक अइसा माफिक चलेगा... ।'(६) इस कथन से स्पष्ट होता हैं कि आजादी मिलने के इतने सालों बाद भी उन आदिवासियों को अपना वजूद एवं अपने हक़ नहीं मिले। आज भी वे सब एक गुमनामी की जिन्दगी जी रहे हैं। ठेकेदारों के शोषण के कारण इन आदिवासियों को अपने सभी हकों से वंचित रहना पड़ता है।

ठेकेदारों एवं भ्रष्टाचारी नेताओं के कारण मजदूर वर्ग की क्या दुर्दशा होती है - इस बात की ओर लेखक ने अंगुलिनिर्देश किया है। जन-ख़दान के मजदूरों की मनोव्यथा को उजागर करते हुए संजीव लिखते हैं- 'ये आँखे वर्षो से देख रही हैं कि किस तरह सरकार यानी देश की संपत्ति की लूट चल रही हैं-आप लोगों की मदद से। जब भी आपने छापा मारा, पकड़े गए निर्दोष मजूर। मालिक आपको पैसा देकर फिर पाक़-साफ़ । फिर से चल पड़ती हैं दोहरी लूट। लेकिन यहाँ कोई व्यक्तिगत मालिकाना नहीं, यह 'जन-ख़दान' हैं, जनता की ख़दान।'(७) प्रस्तुत कथन से भ्रष्टाचारी एवं खोखली राजनीति पर करारा व्यंग्य किया गया है। ठेकेदारों, पुलिस एवं भ्रष्टाचारी नेताओं के कारण निर्दोष मजदूरों का जीवन बद-से बदतर बनता जा रहा है।

यह उपन्यास मजदूरों के एकता की गाथा है। मजदूरों की एकता के बल पर जन-ख़दान के कार्य को बढ़ावा मिला है। मजदूरों की एकता को लेकर संजीव लिखते हैं- 'हम मजदूरों की कोई जाति नहीं होती, हमारा कोई धर्म नहीं हैं, हमारी लड़ाई तब तक चलती रहेगी, जब तक इस धरती से हर तरह का शोषण, गैर-बराबरी, गुलामी और नाइंसाफी मिट नहीं जाती।'(८)

इस प्रकार संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से आदिवासी संस्कृति-परिवेश, आदिवासी मजदूरों की जीवनगाथा को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए है। उपन्यास में व्यक्त किए गए विचारों के जरिए संजीव समाज तक यह संदेश पहुंचाना चाहते हैं कि इस उपन्यास में व्याप्त समस्याएँ सिर्फ किताबी समस्याएँ नहीं हैं, बल्कि समाज में चारों तरफ फैलती जा रही है। इन्हें अनदेखा करने के बजाय इनमें बदलाव लाना चाहिए।

अंततः निष्कर्ष रुप से यह कहा जा सकता है कि संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से हमारी खोखली राजनीति, पुलिस की निष्क्रियता एवं तानाशाही, ठेकेदारों का शोषण, माफिया गिरोहों का आतंक, आर्थिक विषमता, आदिवासी मजदूरों का शोषण आदि समस्याओं को उजागर करते हुए अपने विचारों को यथार्थ रुप से प्रस्तुत किया है।

• भाषा विश्लेषण

भाषा मनुष्य के विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। साहित्य में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा ही है। डॉ.श्यामसुन्दरदास का कथन हैं- 'भाषा ऐसे सार्थक शब्द समूहों का नाम हैं, जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरों के मन तक पहुंचाने और उसे प्रभावित करने में समर्थ होती है। अतएव भाषा का मूल आधार शब्द है।'(९)

सभी रचनाओं का अपना अलग महत्त्व होता है। भाषा के बिना किसी भी रचना का सृजन संभव नही है। लेखक जब किसी रचना का सृजन करता हैं,तब उसका मुख्य आधार भाषा पर ही निर्भर होता है। भाषा जितनी सशक्त होती है, रचना उतनी ही सफल होती है।

संजीव कृत 'धार' उपन्यास की भाषा मूलतः आदिवासी अंचल से जुड़ी हुई हैं। उपन्यास के केन्द्र में संथाल परगना का बाँसगड़ा अँचल एवं संथाल आदिवासी है। हिन्दी में रचा गया यह उपन्यास संथाल आदिवासियों के जीवन को उजागर करता है। अतः संथाली भाषा के शब्द प्रयोग होना स्वाभाविक है। साथ ही साथ इस उपन्यास में अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

संजीव की भाषा स्वाभाविक एवं रोचक है। उपन्यास के आरंभ से अंत तक पाठक को बाँधे रखने में सक्षम

है। उपन्यास के आरंभ में संजीव लिखते हैं- 'जेल का जबड़ा थोड़ा सा खुला और रिहा होनेवाले कैदियों को उगलकर फिर से बन्द हो गया। पहरे का सिपाही सलाखेदार फाटक में ताले बन्द करते हुए इत्मीनान की साँस ले रहा था कि, तभी उसके कानों में कोई शोर सुनाई पड़ा। उसने पलटकर अन्दर देखा तो एक छोटी-मोटी भीड़ उमड़ती चली आ रही थी। इस शोर में सबसे विचित्र थी किसी नवजात शिशु की रुलाई।'(१०) प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता हैं कि संजीव की भाषा पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाली है। संजीव की भाषा में सरलता एवं जिज्ञासा का भाव ज्यादा दिखाई देता है। संजीव की भाषा परिस्थिति का यथार्थ वर्णन करती है। लेखक ने भौगोलिक स्थिति का वर्णन भी यथार्थ रूप से किया है। बिहार स्थित बाँसगड़ा अँचल की भौगोलिक स्थिति का चित्रण करते हुए संजीव लिखते हैं- 'न दिन हैं न रात, दोनों की दहलीज पर संथाल परगना का पूरा नंगा इलाका घायल गुर्राते सूअर की तरह पड़ा है। नंगी-अधनंगी पहाड़ियाँ, जहाँ-तहाँ खड़े शाल, महुए,खजूर और ताड़ के पेड़, ढ़ेरे की झाड़ियाँ, बलुई बंजर धरती, सूखती नदियाँ, सूखते कुएँ-तालाब, भयंकर पोखरिया खादे, जहाँ-तहाँ सोए पड़े मुर्दे से लोग। मन्त्रकीलित पूरा इलाका।'(११) इस कथन से स्पष्ट होता हैं कि संजीव भौगोलिक स्थिति का यथार्थ वर्णन करने में माहिर है। संजीव की भाषा को पढ़ते समय उस अँचल का समग्र चित्र आँखों के सामने उजागर होने लगता है।

संजीव ने अपने उपन्यास में भाषण शैली का भी प्रयोग किया है। इस उपन्यास में जनमोर्चा के नेता अविनाश शर्मा के माध्यम से लेखक ने भाषण शैली का प्रयोग किया है। जन-खदान उद्घाटन के समय मजदूरों को संबोधित करते हुए संजीव लिखते हैं- 'तो साथियों, यह 'धार' ही हमारी शक्ति हैं और धार का भोथरा होना ही मौत। यहाँ ही नहीं, जहाँ-जहाँ भी साम्यवादी सरकारें हैं, यह उपमा लागू होती है। जनखदान आपका शिशु हैं, सपना हैं, सफलता हैं, हालाँकि हैं एक छोटी उपलब्धि मात्र। 'धार' बरकरार रही तो सारा संसार ही आपका है।'(१२) इस कथन से स्पष्ट होता हैं कि लेखक ने चरित्र के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत उपन्यास संथाल परगना के आदिवासियों को केन्द्र में रखकर रचा गया है। अतः इस उपन्यास में संथाली भाषा का प्रयोग भी लेखक ने यथार्थ रूप से किया है। जैसे-

- 'देलावन हिजूकान राते लॉबीर वयसी बाँसगड़ा रे होईया....।'(१३)
  (रात को लॉबीर की बैठक बाँसगड़ा में होने जा रही है।)
- 'ऊहे मउगी नू, जौन हमरा के गरियावत रहलि तो रामसिंध लंगटा करके खदेरि आइल।'(१४)
  (अरे वहीं औरत, जो हमारे साथ लड़-झगड़ रहीं थी, तब रामसिंघ ने उसे नंगा करके भगा दिया था।)

संजीव ने संथाली भाषा में लोकगीतों का भी वर्णन किया है। जैसे-

- 'लेयाड़ गाड़ा धारे रे, हमन हमन दारे
  काहाउ आकान पेड़ा नाइ, वाहा थारे थारे
  वाहा लागिं हायरे मने, जिउंग आख्रान थारे'(१५)
  (बारहों महीने पानी से भरे रहनेवाले छोटे-से नाले के बगल के फूलवाले पेड़ में जगह-जगह फूल खिले हैं रे शिशु। फूल बगीचे में हैं और शिशु हैं दूर। फूल के लिए आकुल हैं शिशु)
- 'दे वाहा बिरिट पे-ए लगन लगन विरिट पे-ए
  जापित रे दो आदो वोया वन वन ताहे ना
  लुदनिदा पारो सेना मासली सेटा सेटेरे ना
  नाउवा बेड़ा हिड़ी-झिरी कुवरे राका वेन

माझरा-माझरा रामकाताते आदो वनवन भूलोया

बुलकाते आदो वोया वन वन ताहे ना।'(१६)

(सभी लोगों, जागो, उठ ख्रड़े हो,जल्दी उठ ख्रड़े हो । अब हम सोए नहीं रहेंगे, रात बीतने को आई है, सुबह फिर लौट आई है। सूर्य की तेज रश्मियाँ चारों और झिलमिला उठी है। साधु लोगों के धोख्रे में अब हम नहीं पड़ेंगे और नशे की ख्रुमारी में भी नहीं पड़े रहेंगे हम,अब हम जग उठेंगे ही।)

संजीव ने इस उपन्यास में पात्र एवं परिवेश के अनुसार अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग भी किया है। जैसे-

- वेल हू इज मिस्टर अविनाश शर्मा..
- माइसेल्फ
- एंड़ व्हेयर इज मिस्टर पंड़ा....
- सो दिस इज योर स्टोक...
- ओह गोड़..।'(१७)

संजीव ने इस उपन्यास में हिन्दी, अंग्रेजी, संथाली आदि भाषा का यथार्थ प्रयोग किया है। संजीव की भाषा सशक्त एवं रोचक है। संजीव की भाषा के बारे में डॉ. रामचन्द्र मारूति लोंढे का कथन है - 'संजीव के उपन्यासों की भाषा सशक्त और अर्थवान है। काव्यात्मकता, प्रवाहात्मकता, आँचलिकता, यथार्थ जनधर्मिता, लोकतत्व जैसी कई विशेषताएँ भाषा में मिलती है। भाषा एक तरफ से संजीव का सामर्थ्य भी हैं और सीमा भी । उन्होंने आँचलिक भाषा को सृजनात्मक रूप देने की जो पहल की हैं, वह उल्लेख्रनीय है।'(१८)

संजीव की भाषा में एक गहरी कसक है। संजीव ने मैना के माध्यम से गरीबी में सड़ रहे लोगो की आर्थिक विषम परिस्थिति के भीषण रूप को उजागर किया है। विषम परिस्थिति का यथार्थ वर्णन करते हुए, उन्होने लिख्रा है - 'हमको याद आता, जब हम बच्चा था, ख्रेती से चार-छै महिना का काम चल जाता, आज एक दिन का भी ऩई। ख्रेत-ख्रतार, पेड़, रूख्र, कूआँ, तालाब, हम और हमरा बाल-बच्चा तक आज तेजाब में गल रआ है। पहले हम चोरी का चीज हैं, नई जानता था, भीख्र कब्भी नई माँगा, चुगली-दलाली कब्भी नई किया, ईज्ज्त कब्भी नई बेचा, आज हम सब करता, आदत पड़ गया हैं, बल्कि कहे इसके बीना गुजारा नई।'(१९) इस कथन से स्पष्ट होता हैं कि लेख्रक की भाषा में ऐसी पीड़ा हैं, जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देती है।

संजीव ने इस उपन्यास का आरंभ जिस जिज्ञासावृत्ति को लेकर किया है, उसका अंत भी उतना ही मर्मस्पर्शी एवं सोचने पर मजबूर कर देने वाला किया है। लेख्रक ने इस उपन्यास में नायिका मैना के संघर्षमय जीवन को उजागर किया है। पूरी जिंदगी संघर्षमय परिस्थितियों से जूझते रहने पर भी अंत में मौत का सामना करने में भी नहीं हिचकिचाती। जनख्रदान को बचाने के लिए वह बुलड़ोजर के सामने आकर अपनी जान की बाजी तक लगा देती है।

इस प्रकार मैना प्रस्तुत उपन्यास का अविस्मरणीय चरित्र है। मैना के चरित्र के बारे में संजीव ने लिख्रा हैं- 'वह मरी नही, मर सकती ही नहीं, जिस दिन सब बुलड़ोजर को उलट आएगी, वह फिर हमारे बीच चली आएगी। अभी उसकी एक झलक पाने का सिर्फ एक उपाय हैं-जुगनू। जहाँ-जहाँ अँधेरे में जुगनू आपको चमकता दिख्रलाई दे, ईमानदारी से पुकारिए, 'मैना !' कान साधे रहिए-बहुत गहराई से कोई जवाब आएगा, 'हूँ.....!'(२०) इस कथन से स्पष्ट होता है कि संजीव की भाषा मर्मस्पर्शी एवं जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाली है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि संजीव की भाषा सरल एवं रोचक तो है ही, साथ ही साथ उनकी भाषा में गहरी कसक भी हैं, जो पाठक को झकझोर देनेवाली एवं सोचने पर मजबूर करनेवाली है। अतः कहा जा

सकता हैं कि संजीव की भाषा जीवंत एवं हृदयस्पर्शी है। इस उपन्यास में हिन्दी, संथाली एवं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग यथार्थ रूप से किया है।

◆ संदर्भ सूचीः

१. संजीव,धार, पृ.१३
२.वही, पृ.३६
३.वही, पृ.३७
४.वही, पृ.४५
५.वही, पृ.१०१
६.वही, पृ.५४
७.वही, पृ.१३७
८.वही. पृ.१५५
९. डॉ.रामचन्द्र मारूति लोंढे, संजीव व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.२४७
१०.संजीव, धार, पृ.०९
११.वही, पृ.३९
१२.वही, पृ.१५७
१३.वही, पृ.५२
१४.वही, पृ.१७०
१५.वही, पृ.१५४
१६.वही, पृ.१५८
१७. वही, पृ.१४७
१८.डॉ.रामचन्द्र मारूति लोंढे, संजीव व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.२५२
१९.संजीव, धार, पृ.५४
२०.वही, पृ.२००

❑